St. Xavier’s College, Mahuadanr
Latehar-822119, Jharkhand

Copy of the Cover page, content page and first page of the book

कुड़ुख़ भाषा साहित्य

डॉ० प्यारी कुजूर

Scanned with CamScanner

कुड़ुख़ भाषा साहित्य

डॉ॰ प्यारी कुजूर

एजुकेशनल बुक सर्विस
नई दिल्ली-110059

Scanned with CamScanner

इस पुस्तक में दी गई सामग्री एवं व्यक्त विचारों के मौलिकता का दायित्व पूर्णतः लेखक का है तथा किसी भी प्रकार की होने वाली हानि के लिए शब्द संयोजक, मुद्रक तथा प्रकाशक का कोई भी दायित्व नहीं होगा।

ISBN : 978-93-93469-49-6

प्रकाशक-

एजुकेशनल बुक सर्विस

एन-3/25-ए, डी. के. रोड, मोहन गार्डन,

उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059 (भारत)

चलभाष : +91-9899665801

ई-मेल : ebs.2012@yahoo.in

कुड़ुख़ भाषा साहित्य

मूल्य : ₹ 400.00

प्रथम संस्करण : 2023

© सुरक्षित

प्रस्तुत पुस्तक का किसी भी रूप में प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना मुद्रण, वितरण एवं पुनः प्रकाशन करना दण्डनीय अपराध है, तथा ऐसा करने पर कानूनी कार्यवाही की जाएगी।

भारत में प्रकाशित-

'एजुकेशनल बुक सर्विस' द्वारा प्रकाशित। सत्यम् प्रिंटोग्राफिक्स द्वारा लेजरटाईप सेटिंग तथा विशाल कौशिक प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

Scanned with CamScanner

तंगआ बक

कुडुख़ कत्था भखा एकला मल्ली,पहे कुडुख़र गही जाति हूँ हिके। ई भखा द्रविड़ परिबा ता भखा तली। हुल्लो परियातिम कच्छनखरते बरआ लगनर ।कुडुख़ भखा ता आलर मझी एकासे तंगआ उज्जना-ओक्कना, ओन्रा-मोक्खना, परब-तिहार मनाबअनर आद दाह दाह ईत्थिरअी। जोक्क कत्थान सोझ मल बअर की तर्क पूर्ण टेढ़ा बक ती हूँ बतारअी, अदिन नाम बुझुरनखरना/कहुता/ मुहाबरा बअदत। पुरखर गही इबड़ा हुरमी तिंग्गका कत्थान जोगाबअना/ मोड़ा मुस्गार की उइना अकय चॉड़ रअी ।एन इबड़ा कत्थान तरपांतीनती खूजना सरियना दरा टूड़ना गही नलख ननजका रअदन। ईद सिखरूर, बचउर अरा बचतुर गे नेब्बा दरा सेब्बा मनो इबड़ा कत्था नीम एन खोड़अर की खोड़हा गही पस्ती नू चिआगे सपड़रकन, ओंदा अक्कू कुडुख़ खोड़हा ता आलर इदिन ईजिरआ। ईद बरना बेड़ा गे टूडू बचऊ कुक्को कुकोयर गे काम लाहओ, एन्ने एन बुझुरदन।

जय धरमे

टुडुऊ

डॉ० प्यारी कुजूर

संत जेवियर महाविद्यालय

महुआडॉर,लातेहार।

कुड़ुख़ भाषा शिक्षण एवं साहित्य

डॉ० प्यारी कुजूर

Scanned with CamScanner

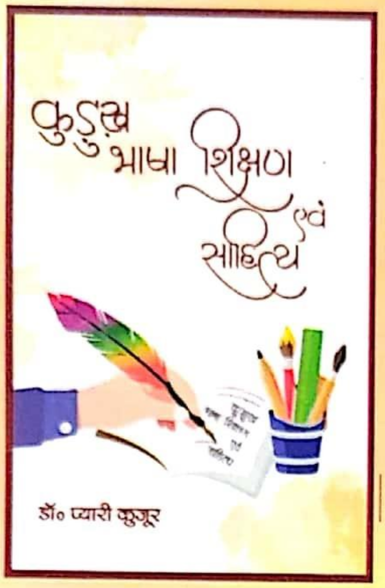

डॉ॰ प्यारी कुजूर

जन्म : 22–01–1973

पिता : स्व॰ धर्मदास कुजूर

माता : श्रीमती दुलारी कुजूर

पति : श्री सुनील बाड़ा

सास–ससुर : स्व॰ दौवलेन बाड़ा व श्री गजेन्द बाड़ा

सीानीय पता – जी॰ ई॰ एल॰ मिशन कम्पउण्ड, मधुवन टोली, पो॰ व थाना लोहरदगा, जिला : लोहरदगा (झारखण्ड)।

शिक्षा : एम॰ ए॰, पी॰–एच॰ डी॰, जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची।

उपलब्धि : बेस्ट डॉ॰ ऑफ फैलोशिप अवार्ड इन कुडुख लैंग्वेज।

कार्यानुभव :

- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा नेट।
- कनीय एवं वरीय अनुसधान कर्ता माननीय प्रो॰ (डॉ॰) नारायान भगत (डोरण्ड कॉलेज, डोरण्डा) के निर्देशन में 28 फरवरी 2013 में पी॰–एच॰ डी॰ की उपाधि प्राप्त।
- जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची में अध्यापन
- डॉ॰ कोबायसी हॉकवा विश्वविद्यालय (जापान) के साथ रिसर्च कार्यानुभव।
- भारतीय भाषा संस्थान, मानसगंगोत्री, मैसूर में भाषा कार्यशालाओं ए सेमिनारों में प्रतिभागी।
- कुडुख व्याकरण कत्थअईन संशोधन कार्यशाला एवं सेमिनार में प्रतिभागी।
- राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय सेमिनार में भाग।

कृतियाँ : कुडुख भाषा साहित्य एवं विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित।

वर्तमान में कार्य : संत जेवियर महाविद्यालय, महुआडाँड़, लातेहार में अध्यापन।

सम्पर्क: संत जेवियर महाविद्यालय, पो॰ व थाना : महुआडाँड़, जिला : लातेहार झारखण्ड।

Price: ₹ 795.00
ISBN: 978-93-93112-04-0

प्रगतिशील प्रकाशन
एन–3/25, प्रथम तल, मोहन गार्डन, उत्तम नगर, नई दिल्ली–59
ई–मेल: pragatisheelprakashan@yahoo.in
चलभाष: +91–9968277749

9 789393 112040

Scanned with CamScanner

इस पुस्तक में ली गई रचनाओं की मौलिकता का प्रमाण एवं व्यक्त विचारों का दायित्व पूर्णतया सम्पादिका का है तथा इससे होने वाली किसी भी प्रकार की हानि के लिए शब्द संयोजक, मुद्रक तथा प्रकाशक का कोई भी दायित्व नहीं होगा।

ISBN : 978-93-93112-04-0

प्रकाशक-

प्रगतिशील प्रकाशन

एन-3/25, प्रथम तल, मोहन गार्डन,

उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059 (भारत)

चलभाष : +91-9968277749

ई-मेल : pragatisheelprakashan@yahoo.in

कुँड़ुख़ भाषा शिक्षण एवं साहित्य

मूल्य : ₹ 795.00

प्रथम संस्करण : 2022

© सुरक्षित

प्रस्तुत पुस्तक का किसी भी रूप में प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना मुद्रण, वितरण एवं पुनः प्रकाशन करना दण्डनीय अपराध है, तथा ऐसा करने पर कानूनी कार्यवाही की जाएगी।

भारत में प्रकाशित-

'प्रगतिशील प्रकाशन' द्वारा प्रकाशित। **एस० के० ग्राफिक्स**,नई दिल्ली द्वारा लेजर टाईपसेटिंग तथा **विशाल कौशिक प्रिन्टर्स**,शाहदरा, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

तंगआ कत्था

ईन्ना एंगा अनाईत कोड़े अरा दव लग्गा लगी की एन निम्हयं मझही नू एंग्हय जिया ता कत्थन उईय्या लगदन। ईद टूड़, बचऊ अरा लूर कुड़िया कालू ख़द्दरगे जोक्क अकिल चिअना गही संघरा चिओ, एन्ने पुथिन बचना गही अकय चॉड़ मनी। हाँ तो एन्ने चॉड़ आबान्म जोक्क नमजद्दी अकिल चिआ खतरी पढुआ बचऊ ख़द्दरगे जोक्क खुटा टेका मनर संघरा मनो होले एका दव मनो घोखअर ई पुथिन टूड़कन कमचकन अरा नम्हय कुड़ुख़ खोड़हा गही पस्ती नू चिआ लगदन इदिन चोन्हा तुले इन्जरआ। एंग्हय टूड़का पूथि किइय्या तो मइय्या लूर कड़िया नू वेवहार मना ओंग्गो। बचऊ ख़द्दर गे अरा बचतुउरगे हूँ इत्तो सहाड़ा ख़क्करओ एन घोखदन का ई पुथि खोड़हा गे दव अरा बेस मनो। इदिन चोन्हा तुले कुड़ुख़ ख़ोड़हा गही पस्ती नू सोपआ लगदन नम्हय कुड़ुख ख़ोड़हा इन्जरओ होले भखा नम्हय पोकता मनर परदो।

जय धरमे।

टूड़

डॉ० प्यारी कुजूर

संत जेवियर कोहा लूरकुड़िया,

महुआडाड़, लातेहार।

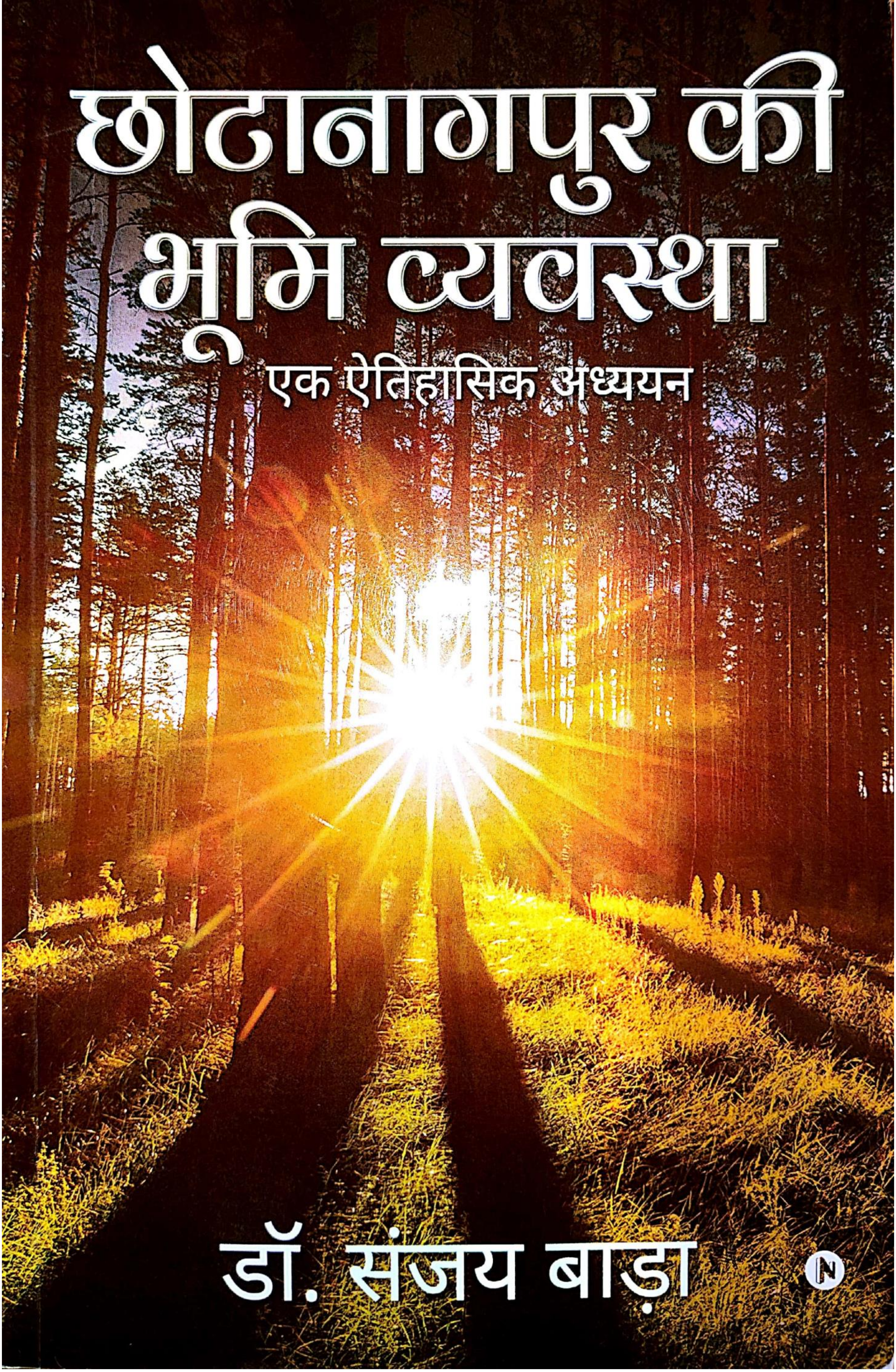

छोटानागपुर की भूमि व्यवस्था

एक ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ. संजय बाड़ा

Scanned with OKEN Scanner

भूमि का प्रश्न आदिवासियों के लिए कितना महत्वपूर्ण है, इसका उत्तर औपनिवेशिक काल के इतिहास में छोटानागपुर में हुए कई आदिवासी विद्रोह एवं आंदोलनों के संदर्भ में समझा जा सकता है। भूमि के बिना आदिवासी अस्तित्वविहीन है, भूमि आदिवासी की पहचान है, जिससे उसकी संस्कृति, परंपरा एवं उनका इतिहास जुड़ा है। आरंभ में जब आदिवासियों का छोटानागपुर में प्रवेश हुआ तब उन्होंने इन घने वन जंगलों को साफ कर अपने लिए भूमि तैयार की। यह भूमि प्रकृति प्रदत्त थी इसलिए इस भूमि पर सर्वप्रथम उनका अधिकार था। जहाँ वह अपनी प्राचीन संस्कृति एवं परंपरा का निर्वाह करता हुआ जीवन यापन कर रहा था, परंतु सभ्यता के विकास के साथ ही यहाँ निवास करने वाले मुंडा, उराँव एवं अन्य आदिवासी समुदाय का बाहरी शोषकों द्वारा शोषण किया जाने लगा एवं इनकी भूमि इनसे छीन ली जाने लगी। इसी के प्रतिक्रिया स्वरूप छोटानागपुर के आदिवासियों ने इन शोषकों (दिकू) के खिलाफ विद्रोह का झंडा बुलंद किया। उनके पास न तो धन था और न ही कोई बहुमूल्य वस्तु, वास्तव में आदिवासियों के लिए उनकी भूमि ही सबसे कीमती एवं सर्वश्रेष्ठ संपत्ति थी। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के पूर्व से ही छोटानागपुर के आदिवासियों ने अपने जल जंगल ज़मीन की रक्षा के लिए अपना बलिदान दे कर शासकों को इस विषय पर चिंतन मनन करने एवं उनके लिए भूमि कानून बनाने के लिए विवश कर दिया था। छोटानागपुर के आदिवासियों के लिए भूमि की महत्ता प्राचीन काल से लेकर आजतक बनी हुई है और भूमि से उनका यह विशिष्ट जुड़ाव उन्हें समाज के अन्य लोगों की श्रेणी से पृथक करती है। प्रस्तुत पुस्तक छोटानागपुर के आदिवासियों के आरंभ से भूमि एवं इससे संबंधित विभिन्न आयामों को रेखांकित करते हुए आदिवासियों के जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं का विश्लेषण कर उनपर महत्वपूर्ण प्रकाश डालती है।

शिक्षा: स्नातकोत्तर (इतिहास) राँची विश्वविद्यालय राँची,

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) नेट 2009 उतीर्ण।

पीएच.डी. (इतिहास) राँची विश्वविद्यालय राँची।

शिक्षण कार्य: वर्ष 2010 से जून 2011 तक विशु भगत महिला महाविद्यालय बेड़ो, राँची में व्याख्याता के रूप में अपनी सेवा दी।

वर्ष 2011, अगस्त से वर्तमान में संत जेवियर्स कॉलेज महुआडांड़, झारखंड के इतिहास विभाग में सहायक प्राध्यापक एवं वाईस प्रिंसिपल (2019) के पद पर कार्यरत।

प्रस्तुत पुस्तक लेखक की पहली किताब है।

इनके द्वारा अनेक पत्र पत्रिकाओं, समाचार पत्र एवं अन्य सोशल प्लेटफार्म पर इनके आलेख छप चुके है।

लेखक 'जनसंघर्ष' पत्रिका के संपादक मंडली के सदस्य है।

प्रकाशित कृतियां

समाचार पत्र

प्रभात खबर – (i) 19 जून 2020, शीर्षक "नागपुर से छोटानागपुर की ऐतिहासिक नामगाथा"

(ii) 11 दिसम्बर 2020, शीर्षक "मैं सीएनटी एक्ट 1908 हूँ"

पत्रिका

हासिये की आवाज – (i) जनवरी 2021, आदिवासियों को जानना होगा इन तीन कृषि कानूनों का सच

(ii) अगस्त 2021, जंगल वहीं बचे है जहाँ आदिवासी है

जनसंघर्ष – (i) मई 2021 (ऑनलाइन संस्करण) शीर्षक "पलायन: ग्रामीण झारखंड का एक कड़वा सत्य"

(ii) जून 2021 (ऑनलाइन संस्करण) शीर्षक "बिरसा के बाद अबुआ दिशुम की चुनौतियाँ"

(iii) जुलाई 2021 (ऑनलाइन संस्करण) शीर्षक "चिच चरि हुज़ूर चिच चरि: महुआडांड़ को समझने का एक प्रयास

ई-मेल: sanjaybara85@gmail.com

Price ₹325
ISBN 978-1-68538-232-2
90000
9 781685 382322

notionpress.com

Scanned with OKEN Scanner

Notion Press Media Pvt Ltd

No. 50, Chettiyar Agaram Main Road,
Vanagaram, Chennai, Tamil Nadu – 600 095

First Published by Notion Press 2021
Copyright © Dr. Sanjay Bara 2021
All Rights Reserved.

ISBN 978-1-68538-232-2

This book has been published with all efforts taken to make the material error-free after the consent of the author. However, the author and the publisher do not assume and hereby disclaim any liability to any party for any loss, damage, or disruption caused by errors or omissions, whether such errors or omissions result from negligence, accident, or any other cause.

While every effort has been made to avoid any mistake or omission, this publication is being sold on the condition and understanding that neither the author nor the publishers or printers would be liable in any manner to any person by reason of any mistake or omission in this publication or for any action taken or omitted to be taken or advice rendered or accepted on the basis of this work. For any defect in printing or binding the publishers will be liable only to replace the defective copy by another copy of this work then available.

JOSEPH M K Digitally signed by JOSEPH M K
Date: 2024.02.21 14:02:57
+05'30'

Scanned with OKEN Scanner